



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥ ३ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ४ ॥ यथा कर्माणि
 नाप्यग्निं न कासे मा भवन्तीति विद्वान् ॥ ५ ॥ अथ मन्त्रः ॥ ६ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 पाह ॥ ८ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ १२ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥
 मन्त्रः ॥ १६ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २० ॥

सत्यं कर्तव्यं
 कर्म योजयितुं
 अथ यत्किंचिदुच्यते ॥ १ ॥ नमः भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 श्रीवैष्णवसुतं प्रवक्ष्यामि शिरोमण्यस्य ॥ ६ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥
 धनं निरूपयितुं यत्किंचिदुच्यते ॥ ११ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥

विम्व वलीनं चिकुर्यत ॥ ननः स्व रु वीज रु कान स्म रि र्दग को धग्ग ता रि ला ख न न रु.
नल वा रु धग्ग क न वा य रु रु न प्र न पि न अ क उ कि नी सा वि नी य रु ना न सा दि ना ग व्या धि
पी अ रु र्दग रु पी या दि रु र्दग रु रु नां क रु नां य रु म पू य मि मा सु ली नं चि रु य त ॥ व र्जा रु ग
दि व र्जा रु म मू ड या ली य रु ॥ ओं न मा व रु ना य ॥ व रु अ रु ला य रु नि ॥ ओं न मा ध र्मा च ॥ ध र्मा
ना मा रु ओं न मः सं घा य ॥ सं घा ना मा रु ॥ ओं न मा गु रु व रु ना वा र्था य ॥ गु रु व रु ना वा र्था

इव मनुजं कृणु मा धिक् कृणु
नामो ह्ये ॥ नमो मातुषाममयजमानादिनां सत्त्वानां भनड्यास्ये हिमद्वि स श्री साहस्रना
नानाधाधिपीडायावक कर्तुं न ह्यननाजमकुीना कसी विप्राभाति सरुआ नीमहाय रुपा उः
मभा ग म मरुमा नी पी ग सर्व न तु मिमाय ह नार्थमी मं ग्रा ग क २ ॥ ०० ॥ विष्णु य ० ०
॥ वमा क मा दि मू ड या न नां य म य र्थ क ॥ स ह द द ना म कु पु स ह न ल ज य न् ॥ न सि ली न स्य
क य न् ॥ न नः अ ग इ ध न ध क न क २ यि य य २ दि ति धा न ॥ थ म स र्व द र्श यि न न न ह न

थुं मः मानय वं न स्त्री वापू न्का वापी उ क आग न्दु २ वं न ॥ वजां क म मूडया विधाप ० न ॥
न न ॥ पूजा विधि ॥ न रसा न क न का रां या न व न ॥ ॐ हूँ ता वे पु डं सादि ॥ १५५ नाना न न रं स
वर्तुता जन स्वका न धा म हा मूर्ति म हा म हा व र न न र द्वा वि ध यो स्व स को पूजा म य ४
प्रवर्षि गं सा व य न् ॥ न नः य च न धा ग ता ॥ १५६ च क क ज न ल ध र्म क र्म स्थान म ४ ॥ ॐ न म ४
सर्व न धा ग ता व ला कि न स म्भ न र र्द सा हा ॥ ०० मि या ० ला ग त पि पु म गि २ २ १ त ०

न ० १ ०० अथा किं द द्या त ॥ ०० नि न र्प न ॥ ॥ वा र्ण प ० ॥ स म य ड्हा मृ दु धी दि
पी उ का क्रिया वापू न्का थ वा स जी व सा क सा कि नी मानय २ धं पू ना र्द स ल्य व जि ता न
न दा ल न ग म्भा हू तः ए व च क प ल यं या नि न न ल न ल य ऊ द पि ॥ त स्मा त्म नू ष्या नां या म नि
म म ज न प द ध पि प न पी जा ल य ज चं च प न य हू स्व मा प्र यः ॥ न स्मा उ ति वि म्व ति पि ॥ धु मा
नि द दा म्य हूँ हू व लु हू स्वा दा दि म्भ २ पु मि २ स म्भु डा नै उ न ग ड्हा ग क्क ग ला क दा नि सा

निर्वर्तय २ ययमपि कदाचित्मानि विक्रय २ ॥ तदा कालं विन कश्चित्वा तत्समयवर्ति
त ॥ यय जीवामपि सक्ति रु दोगो ज्ञानयमया विज वि नि य या क न त क्क न न ति छ ति
ठ क्क न मूख न मूख न ॥ पी उ न न ता म न क यय म क्क नि म य क्क त म य ज्ञान मा णु ण क थ
न च र वि ष य थ ॥ त स्मा ल्प ह दी य ष म न य यान पी उ य । व न्धि गं व न्ति गं वा पि र वा दि ग न थ ॥
य य्वा । ए न पि ना नू र्वा नि षी षं मू क न मू ख न । स म ड्रा क्क ति ग र्क न ०० दानी दी डि न ५ न य

गच्छत ॥ अथ ता तयेव गच्छ २ समय इति तयेव गच्छ ३ ना क्क सी सा कि ती नयेव गच्छ २ महा सारी
सर्वो प ड क पी ज न येव गच्छ त गच्छ त । यदि वि ष य क न सर्व गच्छ २ मा नि व र्क य २ मा नि नी क्क य
नी नी क्क य । कदाचि मा हि मू र्वी र व ॥ ३ ॥ ग न ४ स ह दी ज म क्क न य त ॥ ग न ५ यं ज न ए न ४ ॥
ॐ ग इ ष न क्क क न क्क २ प्रिय य २ दि लि थान (थ म सर्व इ ष प्रि ग न न इ रे थं ज मा न य व म्पु र्वा
पू र्वा वा ह इ ह क्क ४ ना ग इ ष मा ह मा न यि ह न न यो ण न न मां स र क्क २ मा ना सि र क्क २ मा :

नृद्वयकं लक्ष्मणमानविहानं लक्ष्मणमानयवर्गः॥ विष्णुप०॥ लादाया लंघाविहाव
कं लंखधनाथसंलुखानंगय॥ यूपनं कायका धूपधन॥ ॥ धनलि, लिमसावकं जोग
कलक्षय॥ यागिनीरवधसलावकं गणसलागसां वानकलक्ष्मणदं गं पिने दावागसं नं ५॥
वृषिसं नं ५॥ ॥ धनलि नकावकं लि नकं यथा॥ ॥ नानपधर्जनामाहं विगा
ननाहुगं मया। सयारुक्ष्माहुना कालं सर्वसाकैर्ददमिना॥ कृष्णालाहखनाध्मयनवि

विष्णुमिगं उवि। मयूनर्त्यगकचि दथवा लंखनकविगा॥ ००॥ निष्ठी ३ धर्मसिद्धि सागर सन
स्यत्राक्ष्मा आत्मविम्बवलि विक्षिप्तमाफ॥ ००॥ ॥ समय॥ ग्यग्गग्ग॥ ज्ञाष्टाष्टका॥ ॥ ॥ ॥

दश



दश



अथ विष्णुसहस्रनाम



आगिनी खडा स निअम लावकं क्ता पा मूल व लि क्ता य ॥ धं लि ने
 वय धं लि ने मे धं लि आ ल वि न्द्र धं लि व उ म्नी न पूर्व भा य द कि
 आ स पा म्बि म क्ता उ उ न रु क्ता ध नि वा न क र क्ता य ॥
 द धु स म सिया द उ न य ज मा न या मूर्ति द य कं न य ॥
 ध पि न ग्म क्ता सिं रु क्ता मूर्ति म धु ल ग वि सा र कं न य ॥
 द उ वि वि म ल ग क्ता सिं रु क्ता स मा धि म ल स क ता धु उ
 म न न या य मा ल रु ला ॥ उ र रु प रु ग ता ॥





२ नमः भगवत्सूक्तम् ॥ मुखकालाद्युक्तं कर्मविधिमाह ॥ यश्च न तत्रात्मनो विमर्शं कर्मयत्नान्मदि
पिलुक्क पिलुक्काथवायथाभक्तिसङ्गीतं कल्पलंदशानम् ॥ यि न न गमनादिकल्पयो ॥
पूजाद्योवा नन्दनं दंसलानां दीर्घाकानां निरागकानां सर्वाकालभाक्तिकृत्मावल्लवम् ॥ एवं वयमः
पीदानीं नैरिह नैवल्लिदत्याहं मुखकालाद्युक्तं सवल्लिंदत्यादीर्घायां निरागिनां सर्वाकाल
भाक्तिकर्मकृत्वा ॥ ॐ मुनिश्महासूक्तं स्वाहा ॥ अटिनि आत्मानं रत्नवाद्यकमूनिशुक्लवर्ण

मकसखंदिशु जास्यांवल दमडाधनं नस्य द्दि वदुमधुलमधु ॥ ४ ॥ कानु उ क वरु ध्यात्वा
वैवस्वतु यथा ग किं जयत ॥ नमः पूनः वलि ध्यात्वा ॥ स्वरावगु द्व स्यादि धृत्य मानन न उ को
नं नल राजन महायनि सूर्य गिरिनं ग दल न न वदुमधुलोपनिधु कः का ना रु वा नृ नः
ॐ नमः नै का वल धिष्ठानं कर्थात् ॥ नमः रुलास्यां वलि स्य क निव दयत ॥ मकु ॥ ॐ नमः सम
न वृद्धा नां नमः सर्व नथा ग ना वला कि न सक्त नै रू ॥ सक धा प ॥ ० ॥ अं तु लि ध नि द्र ता ॥ १ ॥

यना ॥ ७ ॥ क रा पु वा ७ क वि ग नि वा ना च ॥ ० ॥ व रु ला पु वा स क धा प ॥ ० ॥ नतः ममरु नृ निष
यजमान सयावे वा ना नां सर्व भाग्य रु सर्वा काल मृ त्यु गति के नृ स्वा हा ॥ सर्व य ना नां नाय की मः
स्व का लि नी प्र रु गि ग ग न दी वा लू का ये म प्र न र्था ॥ मृ नः सं ना धि गं रा व यत ॥ थ ल स वा क ल वं
ति स पा न कं क्का य रु चं थ ल स सं ख न ॥ ४ ॥ ॥ नमः पि न्ना का ये रा यत ॥ ॐ नमो वृ द्हा ये ॥ वृ द्हा नां
मा रु ॥ ॐ नमो ध र्मा नं ॥ १ ॥ नमो ॥ लि द्दि रु ला ॥ ४ ॥ ध र्मा नां मा रु ॥ १ ॥ नमो मं द्रा य ॥ मं द्रा

नामादा ॥ महाहासविहासमहाप्रसादममगुरुमिषयजमानसदावेवावस्था नानागान
जायितुआनागजासुविपायनजादयाउरुव। वरुविंभानिकुगनगजानिपीउभकिंकुत्वाहा। य
हाहवदवग्रहनागहा। असुग्रहासध्वग्रहा। कहागुग्रहा। राजगहा। दिरुगनागानिष्ट
आलिभकिंकुत्वाहा ॥ विष्टगनमानगलभूतखननाज। यद्वमयकलीयमसमयद्व
पिभवादिविष्टजानिकुगनागानिसहआपिभकिंकुत्वाहा ॥ विष्टगना ॥ पक्षकहागुगन

भक्त्यादिसायादय

धनिकाभक्त्य

॥ नमः सावना ॥ यदनायकीमूर्खानि कासिनिगंगानदीवात्तकापम
नानां दक्षिणकनआयुधजवामरुक्त आयुधलगुहीननममगुरुमिषयजमानसदावेवा
नसत्यानामायुधगननधनपलायनायुधः धननानयआनयपुरुकलगमानयित्वाः
यजमानस्यदुरुमिनिविक्तयन् ॥ कुरुदीयानामायुधकुंयठित्वायुधगंगसावयम् ॥ नमः
वल्लिपुत्रसमीनिक्रियन् ॥ ॥ मूर्यकालागुक्तामान्यकालाद्वृत्त्यविधिः ॥ अठियानः

ॐ

त्रि

पुनः सहाचार्यदत्तिकन्दनशापानधर्मदत्ता नागमानक क्लानगादनधमः गुनधमः च नना
दुनं सर्वेषां न कुरु ॥ ॥ गुरुकृता नायमकुः ॥ ॐ नमाव द्याय ॥ ॐ नमाधर्माय ॥ ॐ नमा
संघाय ॥ नमः ॥ ॐ आरु वरु कुरु कुरु ननु क हिलिमिलि सुरु क सिलु नमारगवयेन
हा ॥ ॥ सर्वमंगल ॥







